आदरणीय शिक्षकगण,

आशा है आप सकुशल होंगे। आपके त्याग और तप से ही एक सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

शिक्षा के अधिकार कानून के लागू होने के बाद शिक्षा-क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी जन के दायित्व और भी बढ़ गए हैं। 6-14 आयु वर्ग के बच्चों का यह अधिकार है कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और इसे प्रदान करने के सभी उपादानों को संगठित, संतुलित और न्यायपूर्ण तरीके से उन तक पहुँचाना हमारा दायित्व है।

माँ-पिता के बाद बच्चों से सीधा संवाद यदि कोई स्थापित करता है, तो वह हैं आप शिक्षक। शिक्षक ही बच्चों का स्वाभाविक रूप से मार्गदर्शन कर उन्हें उनकी रुचि के अनुसार आगे बढ़ने में प्रेरक का कार्य करते हैं।

बिहार की नयी पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकें बच्चों को खुद करके सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। आप इस तथ्य से भली-भाँति अवगत होंगे। पाठ्यपुस्तक में संयोजित पाठ के उद्देश्य क्या हैं? उनसे गुजरकर बच्चों में कौन-से कौशल विकसित होंगे ? हम उनका सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कैसे करेंगे? शिक्षकों को इसकी स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। आपकी शैक्षिक ज़रूरतों, वर्ग-कक्ष में पाठ विनिमयन में आपको सहयोग करने के उद्देश्य से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका का निर्माण शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए किया गया है। यह प्रत्येक पाठ में उद्देश्य के साथ-साथ पाठ विनिमयन में की जाने वाली गतिविधियों के संयोजन एवं तद्नुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की रूप-रेखा तैयार करने में आपका सहयोग करेगी, ऐसी आशा है। प्रथम चरण में कक्षा I से V तक की हिन्दी एवं गणित विषय की शिक्षण सहयोग संदर्शिका का विकास यूनिसेफ, बिहार के सहयोग से एस. सी.ई.आर.टी., पटना, बी.ई.पी. एवं बी.ई.क्यू.एम. के संयुक्त प्रयास से किया गया है। शेष संदर्शिकाओं का विकास प्रक्रियाधीन है।

आपसे अनुरोध है कि आप वर्ग विनिमयन और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में इस संदर्शिका की सहायता लें तथा इस संदर्शिका को और मूल्यवान बनाने हेतु हमें सुझाव दें। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद!

(राहुल सिंह)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दिशाबोध

राहुल सिंह
राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

हसन वारिस
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

मधुसूदन पासवान
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रारंभिक एवं औपचारिक शिक्षा
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दीपक कुमार सिंह
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, नवाचारी शिक्षा,
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना-सह-
कार्यक्रम प्रबंधक, बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

राजीव सिन्हा
प्रोग्राम मैनेजर, यूनिसेफ, पटना

डॉ. एस.ए.मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एस.सी.ई.आर.टी., पटना

डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन
एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर (वैशाली)

अकादमिक संयोजक

डॉ. श्वेता सांडिल्य
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना

नीरज दास गुरु
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

नलिन कुमार मिश्र
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

डा0 उदय कुमार उज्जवल
अपर राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

भारत भूषण
विशेषज्ञ, शिक्षक-प्रशिक्षण
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

डा0 नरेश कुमार सिंह
विशेषज्ञ, अनुश्रवण एवं अकादमिक अनुसमर्थन
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

लेखन-सहयोग

जितेन्द्र कुमार, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, महमदा, परैया, गया, **कृत प्रसाद,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, चंडासी, नूरसराय, नालंदा, **अरशद रज़ा,** सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा, रहुई, नालंदा, **अरविन्द कुमार,** साधनसेवी, प्रखंड-संसाधन केन्द्र, नगर निगम, गया, **विकास कुमार,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, बसकुटिया, चकाई, जमुई, **मनोज त्रिपाठी,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, फरना, बड़हरा, भोजपुर

समीक्षा एवं संशोधन-परिमार्जन

बिरेन्द्र सिंह रावत, शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **संजय शर्मा,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **डॉ. राकेश सिंह,** शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली, **चन्दन श्रीवास्तव,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **कृष्णकांत ठाकुर,** पूर्व राज्य साधनसेवी, बी.ई.पी., पटना, **सुमन कुमार सिंह,** मध्य विद्यालय, कौड़िया बसंत, भगवानपुर हाट, सीवान, **मनीष रंजन,** प्राथमिक विद्यालय, मित्तनचक मुसहरी, सम्पतचक, पटना

शिक्षकों के लिए संदेश

पाठचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ-योजनाओं पर चर्चाएँ होती रही हैं। पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए पाठ-योजना की जरूरत पर भी बल दिया जाता रहा है। किसी भी कार्य को करने के लिए योजना की जरूरत होती है। प्रत्येक पाठ का एक उद्देश्य होता है। हर पाठ में बच्चों के लिए कुछ दक्षता निहित होती है। शिक्षक को उद्देश्य ज्ञात होना चाहिए क्योंकि लक्ष्य का पता हो तो रास्ता ढूँढ़ना आसान होता है।

बिहार पाठचर्या की रूप-रेखा-2008 के अनुसार, ''बच्चे अनुभव के जरिए, कुछ बनाते और करते हुए, प्रयोग करते, पढ़ते, बहस करते, पूछते, सुनते, सोचते और जवाब देते हुए तथा खुद को वाणी, गतिविधि तथा लेखन के जरिए अभिव्यक्त करते हुए सीखते हैं।'' अतः सिखाने के लिए आवश्यक है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखा जाय। यह शिक्षण-संदर्शिका शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु है। इसमें प्रत्येक पाठ का उद्देश्य एवं बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर किए जाने वाले क्रिया-कलापों की चर्चा की गयी है।

परंपरागत पढ़ाई में शिक्षक पूरे वर्ग से एक साथ बातचीत करते हैं जबकि बच्चे अलग-अलग दक्षता स्तर के होते हैं। ऐसे में कुछ बच्चे सीखते हैं, कुछ कम सीखते हैं, कुछ बहुत कम सीखते हैं। किसी विषय-वस्तु को पढ़ाने से पहले उसका संदर्भ बनाना या उसकी भूमिका बनाना इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है कि यह बच्चों को वह संदर्भ उपलब्ध कराता है जिससे वे नये सिखाये या पढ़ाये जा रहे ज्ञान को अपने ज्ञान के मौजूदा स्तर से जोड़ते हुए आगे नया सीख पाएँ। बशर्ते यह काम ठीक से व बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाय। शिक्षकों को कुछ हद तक बच्चों को पाठ से जोड़ने वाली एक सार्थक बातचीत करना जरूरी है। कक्षा में पाठ की भूमिका बनाते हुए बोले गये वाक्य बच्चों के वश में न रहने वाले मन को विषय से जोड़ता है। परन्तु, हमारा उद्देश्य यहाँ पूरा नहीं होता, यहाँ समूह-कार्य की आवश्यकता महसूस होती है।

समूह में बच्चे अपने दोस्तों से सीखते हैं। एक दूसरे से ज्यादा खुलते हैं। हम बच्चों को आपस में बातचीत कर सीखने का मौका नहीं देते। शिक्षक का ऐसा मान लेना कि वही सिखाने वाले हैं, गलत है। वास्तव में प्रत्येक बच्चा किसी शिक्षक के वनिस्पत हम उम्र साथियों से ज्यादा सीखता है। साथियों के साथ प्रश्न पूछने की आजादी तथा सरलता से तथा दोस्ताना माहौल में सीखने का मौका मिलता है। सहभागिता की भावना का विकास होता है। बच्चे वर्ग में शिक्षक द्वारा बतायी गयी बातों को जब समूह में एक दूसरे की सहायता से करते हैं तो समझ सुदृढ़ होती है।

सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर पाना ही सीखने की उपयोगिता है। बच्चे जब खुद करके सीखेंगे तो उनका आत्मबल बढ़ेगा, अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ेगी और तभी सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर सकेंगे। अतः सिखाने की प्रक्रिया में व्यक्तिगत कार्य आवश्यक हो जाता है। व्यक्तिगत रूप से काम करने से बच्चा अपने अनुभवों को व्यवस्थित कर सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को प्रश्न करने का ज्यादा मौका दें। स्वाध्याय करने तथा मूल्यांकन दोनों ही कामों के लिए व्यक्तिगत कार्य किया जा सकता है। व्यक्तिगत कार्य की सफलता तभी है जब प्रत्येक बच्चे के द्वारा किये गये काम को जाँचा जा सके। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों को दिये जाने वाले कार्य चुनौतीपूर्ण हों। यह चुनौती न बहुत आसान हो, और न बहुत कठिन। चुनौतियाँ बच्चों के उत्साह को बनाये रखती हैं तथा उत्साह सीखने की प्रक्रिया को तीव्र करता है।

प्रत्येक शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक बच्चा वर्ग-कक्ष में दिये गये अभ्यासों को तथा पाठ्य-पुस्तक के अंत में दिये गये लिखित एवं मौखिक अभ्यासों को करे तथा उन अभ्यासों की जाँच पूरे धैर्य के साथ की जाए ताकि बच्चों को

अगर कोई कठिनाई हो तो वह कठिनाई दूर की जा सके। बच्चे पूर्ण रूप से सीखें हैं या नहीं इसके लिए शिक्षक पाठ की पुनरावृत्ति करें । बच्चों से पाठ संबंधित बातें करें, पूछें एवं यह जानने की कोशिश ही नहीं करें वल्कि अवश्य जानें कि सभी बच्चे सीख गए हैं। नहीं सीख पाये बच्चों की पहचान करें एवं उनका पुनर्बलन करें।

बिहार की स्कूली शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित नयी पाठ्यपुस्तकें कुछ नया सोचने और करने को तथा खोजने को उत्प्रेरित करती हैं। अतः पाठों के अंत में दिए गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर सिर्फ उस पाठ से नहीं खोजे जा सकते वल्कि इन्हें खोजने व उत्तर पाने के लिए कई बार पाठ्यपुस्तक और स्कूल की परिधि से बाहर जाना होगा। पुरानी एवं नयी पाठ्यपुस्तकों में यह एक बड़ा फर्क है। ऐसे में शिक्षक-शिक्षिकाओं को नये नज़रिये के साथ इन पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना-पढ़ाना चाहिए।

शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में प्रत्येक गतिविधि समूह से, पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार, जोड़-घटा सकते हैं। आपने पंचतंत्र का नाम अवश्य सुना होगा। एक राजा को चिंता थी कि उसके राजकुमार पढ़ते नहीं हैं। कई गुरु बुलाये गये परन्तु वे सारे के सारे चंचल राजकुमार के सामने असफल साबित हुए। बाद में पंडित विष्णुशर्मा को बुलाया गया। उन्होंने राजकुमार को पोथियों से नहीं, बल्कि कहानियों से शिक्षा देनी शुरू की। उनके किस्सों में नीरसता नहीं थी और प्रत्येक कहानी के पीछे एक संदेश छिपा होता था। कल तक के उदंड राजकुमार अब इनमें रस लेने लगे और उस योग्यता को हासिल कर सके, जिसकी उनसे उम्मीद थी। इन्हीं कहानियों का संग्रह 'पंचतंत्र' कहलाता है। आज भी ये कहानियाँ बच्चे सुनते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखते हैं। ऐसा कहने का तात्पर्य है कि यह स्थापित हो गया है कि हमारी बुद्धि, हमारे अनुभव एवं सूझ-बूझ के इस्तेमाल करने का प्रतिफल है। कोई भी नई बात हम अपनी पूर्व जानकारी के बाद सीखते हैं। किसी भी वर्ग-कक्ष में बच्चों के सामान्य अनुभव पर आधारित बातचीत के आधार पर ही नयी जानकारी दें तथा ज्ञान के सृजन हेतु माहौल बनायें। बच्चों की सामान्य बुद्धि/अनुभव पर आधारित क्रिया-कलाप, बच्चों के बुद्धि के विकास में सहायक होंगे। हमारा उद्देश्य बच्चों की पढ़ने में अभिरुचि पैदा कराना होना चाहिए। इसलिए शिक्षक अपने बुद्धि-विवेक से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका में सुधार कर सकते हैं।

अतः शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में से गतिविधि आधारित बच्चों के निर्णय लेने की क्षमता का सम्मान करते हुए पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार जोड़-घटा सकते हैं। प्रत्येक गतिविधि के बाद अपना एवं बच्चों का मूल्याँकन जरूर करें। इसके आधार पर हर पाठ के बाद दी गई तालिका को भरना होगा। यह संदर्शिका केवल एक मार्गदर्शन है। अतः शिक्षकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। राज्य के सभी प्रारंभिक विद्यालयों में विद्यार्थी प्रगति-पत्रक का संधारण सुनिश्चित करने का निर्णय शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा लिया गया है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए कक्षावार-विषयवार पूरे वर्ष में प्रत्येक चार माह पर इस प्रगति-पत्रक को भरना अनिवार्य है। यह प्रगति-पत्रक प्रत्येक बच्चे की शैक्षिक और सह-शैक्षिक उपलब्धियों का दर्पण होगा। अतः इस संदर्शिका में संबद्ध अंश भी दिया जा रहा है। अपेक्षा है कि मूल्यांकन की योजना बनाते समय आप इस प्रगति-पत्रक को अवश्य ध्यान में रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित

अकादमिक संयोजक दल

शिक्षकों के लिए निर्देश

- बच्चों से बातचीत करें ताकि भयमुक्त वातावरण का निर्माण हो सकें।
- बच्चे अपनी बातों को सहज व सरल रूप से बोल सकें।
- बच्चो को दिये जाने वाले निर्देश स्पष्ट व सरल भाषा में दिये जाएँ, जिससे बच्चे आसानी से उन्हें समझ सकें।
- उदाहरण दैनिक जीवन व परिवेश से सम्बन्धित हो।
- विद्यालय प्रांगण में पायी जाने वाली विभिन्न वस्तुओं का शिक्षण–अधिगम सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाए।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी सुनिश्चित करें।
- शिक्षक / शिक्षिका बच्चों की बातों को ध्यानपूर्वक व धैर्यपूर्वक सुनें।
- बच्चों से सवाल केवल हल ही ना कराये जायें, सवाल बनवायें भी जाएँ।
- कक्षा में बच्चों की संख्या एवं गतिविधि की आवश्यकतानुसार समूह व समूह में बच्चों की संख्या का निर्धारण किया जाए।
- अवधारणाओं के विकास हेतु बच्चों से संबंधित चित्रों को बनवायें तथा आवश्यकतानुसार रंग भरवायें।
- पाठ के उद्देश्यों के अनुरूप ही गतिविधियों का चयन एवं निर्माण करें।
- जब बच्चे गतिविधियाँ कर रहें हो तो शिक्षक / शिक्षिक लगातार अवलोकन करते रहें।
- बच्चों को समूह में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए, जिससे समूह भावना का विकास होगा।
- बेकार सामग्री की सहायता से शिक्षण–अधिगम सामग्री का निर्माण करवायें।
- बच्चों की गलतियाँ पहचानें व उनका निराकरण करें।
- समय–समय पर बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे वे अपने कार्य को करने के लिए अभिप्रेरित हो।

अंकुर, भाग 3, वर्ग–III के चित्रण–उद्देश्य

- बच्चों को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।
- पठित सामग्री को अपने निजी परिवेश के साथ संबद्ध करने की योग्यता विकसित करना।
- कविताओं को समझ और लय के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत विषय–वस्तु पर बोलने एवं लिखने की क्षमता विकसित करना।
- कहानियों को समझ के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्नों की जानकारी एवं उनके उपयोग की क्षमता विकसित करना।
- देखकर सही–सही लिखना (अनुलेख)।
- सुनकर सही–सही लिखना (श्रुतिलेख)।
- कहानी / घटना का सार सुनाने की क्षमता विकसित करना।
- बाल पत्रिकाएँ, बाल अखबार आदि पढ़ने की रुचि विकसित करना।
- देखकर बिना बोले (मौन पठन) पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न ध्वनियों के बीच के सूक्ष्म अंतर को समझने की क्षमता विकसित करना।
- समान ध्वनि वाले शब्दों को लिखना।
- अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों की समझ एवं लिखित तथा मौखिक अभिव्यक्ति में क्रमबद्धता रखने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्नों के उपयोग।
- व्याकरण का सामान्य परिचय–संज्ञा, विशेषण, वचन, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, विपरीतार्थक शब्द, समानार्थी शब्द।

अनुक्रमणिका

पाठ–संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ–संख्या
पाठ – 1	प्रार्थना	1
पाठ – 2	प्रतीक्षा	2
पाठ – 3	मेरा गाँव	4
पाठ – 4	बब्बन बन्दर	5
पाठ – 5	खूब मजे हैं मौसम के	7
पाठ – 6	जंगल में सभा	9
पाठ – 7	फुलवारी	11
पाठ – 8	रक्षाबंधन	12
पाठ – 9	तिरंगा	14
पाठ – 10	कौवा और साँप	15
पाठ – 11	उलटा–पुलटा	17
पाठ – 12	गाँधी जी की कहानी–चित्रों की जुबानी	19
पाठ – 13	राजगीर	20
पाठ – 14	दीप जले	21
पाठ – 15	साहसी इंदिरा	23
पाठ – 16	गंगा नदी	24
पाठ – 17	बैलगाड़ी का दाम	26
पाठ – 18	हम सब	28
पाठ – 19	कुत्ते की कहानी	30
पाठ – 20	खेल–खेल में	32

पाठ - 1 : प्रार्थना

उद्देश्य

- कविता को लय के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- कविता के अर्थ को समझने की समझ विकसित करना।
- वाक्य–निर्माण की लिखित क्षमता उत्पन्न करना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक सही उच्चारण लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़कर सुनायें।
- बच्चों से लय में कविता गववायें तथा पढ़वायें।
- कविता में आये कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनसे संबंधित बातचीत करे तथा शब्दों को बोलकर, पढकर सुनायें।
- कविता के भाव पर बच्चों से बातचीत कीजिए।

समूह–कार्य

- बच्चों को संख्या के आधार पर समूह में विभाजित कर कविता में आये शब्दों के संबंध में वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें, जैसे–माटी, घर, देश, मन, भाषा आदि।
- बच्चों की संख्या के आधार पर समूह बनाकर प्रत्येक समूह को कविता की तीन–तीन पंक्तियों पर सबको आपस में बातचीत करने के लिए प्रेरित कीजिए।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास का हल समूह में बातचीत कर लिखने के लिए कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन वाचीन करायें।
- कविता में प्रयोग किए गए शब्दों को लिखने का अभ्यास करायें।
- कठिन शब्दों के अर्थ ढूँढ़वायें।
- पाठ में दिए गए अभ्यास का हल करायें एवं उसकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से व्यक्तिगत रूप से कविता सुनें।
- बच्चों को सामूहिक रूप से कविता सुनाने के लिए प्रेरित करें।
- कविता का अर्थ बच्चों से सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता को लय के साथ पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता को पढ़ कर समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देख कर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी बात पूरे वाक्य में बोल सकते हैं।

पाठ - 2 : प्रतीक्षा

उद्देश्य

- कहानियों को समझ के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- पठन–गति में तीव्रता लाना। (वाचन क्षमता)
- किसी विषय पर चार पंक्तियाँ लिखने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से भगवान बुद्ध के बारे में चर्चा करें। पहले उनके अनुभवों को सुनें तथा शिक्षक अपने अनुभव भी उनमें जोड़ें।
- पाठ को कहानी के रूप में बच्चों को सुनायें।
- मानक उच्चारण, हाव–भाव के साथ पाठ पढ़ कर सुनायें तथा बच्चों से भी पाठ पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें तथा बच्चों को उन शब्दों को पाठ में खोजने को कहें, बच्चों से शब्द अर्थ भी पूछें। यदि बच्चे अर्थ न जानतें हो; तो अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।

समूह–कार्य

- बच्चों को समूह में उनके परिवेश में आने वाले लोगों/बच्चों की सूची बनाने को कहें। बाद में सूची पढ़कर सुनाने कहें।
- समूह बनाकर पाठ में दिये गये संवादों को बोलने का अभ्यास करने को कहें। उसकी प्रस्तुति करायें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- कहानी में प्रयोग किये गये कुछ शब्दों को छाँटकर उनके समान अर्थ वाले शब्दों के विकल्प खोजने का अभ्यास करवायें।
- समूह में, पाठ में दिये गये शब्दों पर वाक्य लिखने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- शिक्षक पुस्तकालय में उपलब्ध कहानी की किताब बच्चों को समूह में दें और बच्चों से उस कहानी पर समूह में कठिन शब्द लिखने, प्रश्न बनाने और जवाब बनाने का कार्य करायें।
- पाठ को देखकर मन–ही–मन पढ़ने के लिए कहें। अर्थ समझ में नहीं आनेवाले शब्दों को लिखने के लिए कहें।
- श्रुतिलेख लिखवाएँ, एवं जाँचें। शब्दों से वाक्य बनवायें और उनकी जाँच करें।
- पाठ को देखकर चार पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- पाठ मे दिये गये अभ्यासों के प्रश्न हल करायें।
- बच्चों से सोचकर लिखने/बोलने के लिए कहें – क्या उनके जीवन में कभी इंतजार करने का मौका आया है ? इंतजार करते हुए उन्होंने समय कैसे बिताया ?

पुनरावृत्ति

- सभी बच्चों को एक–एक पंक्ति बोलते हुए कहानी को पूरी करने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ का एक–एक अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहें।
- किसी एक अनुच्छेद के संबंध में सभी के विचार जानें।
- कविता का अर्थ बच्चों से सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कहानियों को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी विषय पर कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर ठीक–ठीक लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सुनकर शब्दों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवादों को समझ कर पढ़ सकते हैं।

पाठ - 3 : मेरा गाँव

उद्देश्य

- कविता को लय के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- कविता में निहित भाव की समझ विकसित करना।
- देखकर सही–सही लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों के अर्थ समझ कर उसे अलग–अलग संदर्भ में अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।

पाठ–परिचय

- बच्चों से पूछें कि उनका गाँव कैसा है ? उनके गाँव में क्या–क्या है ? बच्चों को पूरे–पूरे वाक्यों में ज्यादा–से–ज्यादा बोलने का मौका दें। गलत वाक्यों के लिए बच्चों को न टोकें।
- शिक्षक हाव–भाव एवं लय से पाठ पढ़ कर सुनायें।
- बच्चों से भी समूह में व्यक्तिगत रूप से कविता सुनें।
- पाठ में आये शब्दों के व्यापक अर्थ को समझायें।
- कविता के भावार्थ पर बच्चों से बात करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के पाँच समूह बनायें। पहले समूह को गाँव के लोगों के बारे में, दूसरे को खेतों एवं बगीचों के बारे में, तीसरे को घरों के बारे में, चौथे को बाजार के बारे में एवं पाँचवें को बच्चों के खेलों के बारे में बात करने और लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों से समूह की बातचीत को पढ़कर सुनाने को कहें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत करके लिखने को कहें।
- हाट, सिनेमा, गाँव के साथी आदि विषयों पर छोटे–छोटे अनुच्छेद तैयार कर प्रस्तुत करने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहें।
- पाठ को देखकर मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को पाठ से खोजकर लिखने के लिए कहें।
- श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें व शब्दों से वाक्य बनवायें एवं उसकी जाँच करें।
- पाठ में आये अलग–अलग प्रसंगों पर चित्र बनाने को कहें।
- बच्चों को पाठ से संबंधित वस्तु के संबंध में चार पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों का हल करने के लिए कहें एवं इसकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनी जा सकती है।
- बच्चों से पूछें उन्हें 'अपने गाँव' की कौन–कौन सी बातें अच्छी लगती हैं।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा		
बच्चों की संख्या, जो कविता को लयबद्ध पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता के अर्थ को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों का अलग संदर्भ में प्रयोग कर सकते हैं।

पाठ - 4 : बब्बन बन्दर

उद्देश्य

- कहानी को समझ के साथ पढ़ने की योग्यता विकसित करना।
- संवादों को समझ कर पढ़ने की समझ विकसित करना।
- पठन–गति में तीव्रता लाना।
- अन्य कहानियों एवं पुस्तकों को पढ़ने की रुचि विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें उन्होंने कौन–कौन से जंगली जानवर देखे हैं ? वे जानवर क्या–क्या करते हैं ? बच्चों से जानवरों के नाम श्यामपट पर लिखवायें।
- शाकाहारी, मांसाहारी, जंगली एवं पालतू जानवरों की सूची बनवायें।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र के बारे में बातचीत करें। बातचीत करें कि अगर जानवर पढ़ने लगेंगे तो क्या–क्या बन सकते हैं ?
- ''बब्बन बन्दर'' की कहानी बच्चों को संक्षेप में अपने शब्दों में सुनायें।
- शिक्षक शुद्ध उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ पाठ पढ़कर सुनायें। बच्चों से भी पाठ का हाव–भाव के साथ वाचन करायें।
- कठिन शब्द ढूँढ़कर उन्हें बच्चों से श्यामपट पर लिखवायें। उनके अर्थ पर बातचीत करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर बातचीत करें तथा अलग–अलग समूहों में उन्हें बातचीत करने के लिए कहें कि पढ़ने से क्या लाभ है ? बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक दो बच्चों को समूह में हुई बातचीत को लिखने और पढ़ने का मौका दें।
- चार–पाँच समूह बनाकर बच्चों से बातचीत कर उन बच्चों के नाम लिखने को कहें जो स्कूल नहीं आते हैं। उन्हें आपस में बात करने के लिए कहें कि ऐसे बच्चों को स्कूल कैसे लाया जाए ? बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों से समूह में हुई बातचीत को बोलकर सुनाने कहें।
- पुस्तकालय में खरीदी गयी पुस्तकों में जानवरों से संबंधित कहानियाँ ढूँढ़ कर पढ़ने को कहें।
- समूह में कोई अन्य कहानी भी सुनाने को कहें जो उन्होंने किसी से सुनी हो।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने के लिए कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को देखकर बिना बोले (मौन) पढ़ने के लिए कहें। अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखने के लिए कहें।
- कठिन शब्दो के अर्थ लिखवायें।
- श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें। शब्दों के लिखित वाक्य बनाने के लिए कहें एवं इनकी जाँच करें।
- अभ्यास के प्रश्नों को हल करने को कहें एवं बच्चों को कोई भी कहानी सुनाने को प्रोत्साहित कीजिए।
- पाठ में से देखकर कुछ पंक्तियाँ लिखने के लिए कहें।
- अपने विद्यालय के बारे में कुछ वाक्य लिखने के लिए कहें।

- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के कुछ वाक्य पढ़वायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कहानी सुनें।
- एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति बोलते हुए सभी बच्चों के सहयोग से नई कहानी बनवायें।
- बच्चों से पूछें कि उन्हें कहानी कैसी लगी? अगर अच्छी लगी तो क्या–क्या अच्छा लगा?

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो कहानियों को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो धारा प्रवाह पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी विषय पर चार वाक्य लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अन्य पुस्तकों/ कहानियों को पढ़ने में रुचि रखते हैं।

पाठ - 5 : खूब मजे हैं मौसम के

उद्देश्य

- कविता को लय के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- देखकर सही–सही लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अन्य कविताओं को पढ़ने की रुचि विकसित करना।
- किसी विषय पर चार पंक्तियाँ लिखने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें अभी कौन–सा मौसम चल रहा है।
- इस मौसम में क्या–क्या होता है ?
- इसके बाद कौन–सा मौसम आएगा ?
- उस मौसम में क्या–क्या होगा ?
- बच्चों को ज़्यादा–से–ज़्यादा बातें कहने का मौका दें। बच्चों की बातचीत को श्यामपट पर लिखें।
- बच्चों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनें।
- शिक्षक शुद्ध उच्चारण एवं लय के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से भी सुनें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक कर श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उस शब्द का अनुमान के आधार पर अर्थ ढूँढ़ने को कहें। सही अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।
- बच्चों को सभी मौसमों के बारे में बतायें। बच्चों के मौसम से जुड़े अनुभव को लिखवायें तथा कक्षा में टँगवायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के तीन समूह बनाकर उन्हें कविता के एक–एक खंड के अर्थ पर बातचीत करने को कहें।
- तीन समूह बनायें। एक समूह को जाड़े के दिनों के बारे में, दूसरे को गर्मी के दिनों के बारे में तथा तीसरे समूह को बरसात के बारे में बात करने को कहें। की गयी बातचीत को लिखने को कहें, जैसे–बरसात का मौसम किस महीने में होता है ? इस मौसम में कौन–से फल और सब्जियाँ मिलती हैं ? इस मौसम में लोग क्या करते हैं और उन्हें यह मौसम कैसा लगता है? बारी–बारी से प्रत्येक समूह के बच्चों से लिखी गयी बात को पढ़वायें।
- पुस्तकालय की पुस्तकों में जानवरों से संबंधित कहानियाँ ढूँढ़ कर पढ़ने को कहें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।

मौसम के ऊपर समूह में कविता बनाने को दे; जैसे –

पहली पंक्ति – मौसम का नाम – गर्मी
दूसरी पंक्ति – मौसम की अच्छाई – सुहाना, अच्छा
तीसरी पंक्ति – मौसम की बुराई – बहुत गर्मी साथ पसीना
चौथी पंक्ति – कौन–से फल – खाओ आम और लीची

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को बिना बोले पढ़ने (मौन पठन) के लिए कहें।
- समझ में नहीं आनेवाले शब्दों एवं उनके अर्थ को लिखने के लिए कहें।
- श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- शब्दों की सहायता से वाक्य–निर्माण करने के लिए कहें।
- किसी वस्तु का नाम देकर उस पर चार वाक्य लिखने के लिए कहें, जैसे पंखा, आग, लकड़ी, पत्ता इत्यादि।
- 'मेरे पसंद का मौसम' विषय पर बच्चों से लिखवायें तथा जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- कुछ बच्चों से कविता के अर्थ पर बातचीत करें।
- कठिन शब्दों को सुनकर लिखने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो धारा प्रवाह पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता को समझकर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी विषय पर कुछ वाक्य लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपने भाव अभिव्यक्त कर सकते हैं।

पाठ - 6 : जंगल में सभा

उद्देश्य

- कहानियों को समझ के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी कहने की कला का विकास करना।
- अधूरी कहानी को पूरी करने की क्षमता विकसित करना।
- अन्य पुस्तकों को पढ़ने की रुचि विकसित करना।
- विराम चिह्नों का प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें– क्या उन्होंने कोई सभा देखी है ? सभा के बारे में बच्चों से बातचीत करें।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र के बारे में बातचीत करें, जैसे– चित्र में क्या हो रहा है? क्या बातचीत हो रही होगी आदि।
- अगर जानवर मीटिंग / सभा करने लगेंगे, तो क्या–क्या बातें कर सकते हैं ? बच्चों की बातों को श्यामपट पर लिखें।
- विद्यालय में सभा कब–कब होती है? इस पर बातचीत करें।
- बब्बन बन्दर की कहानी सुनायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ पाठ पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- अगले दिन जानवरों की सभा में क्या बातचीत हुई होगी ? इस पर बात करें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक कर श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों की बातचीत को श्यामपट पर लिखें। उन शब्दों के अर्थ भी बतायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनायें। पहला समूह स्कूल की सफाई, दूसरा घर की सफाई, तीसरा समूह सड़कों की सफाई तथा चौथा समूह बाज़ार की सफाई के संबंध में बातचीत करेंगे। बातचीत को लिखने कहें और बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को समूह में हुई बातचीत को पढ़कर सुनाने का मौका दें।
- चार–पाँच समूह बनाकर बच्चों को सोचने का मौका दें कि जंगल की साफ़–सफाई में कौन जानवर क्या काम कर सकता है ? बारी–बारी से प्रत्येक समूह को प्रस्तुति करने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर निकालने को कहें।
- पुस्तकालय में खरीदी गयी पुस्तकों में जानवरों से संबंधित कहानियाँ ढूँढ़ कर पढ़ने के लिए कहें।
- बच्चों से कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करायें।
- बच्चों को किसी भी विषय पर 'सभा' करने के लिए प्रोत्साहित करें तथा सभा में उठे विषयों को लिखने के लिए कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ बिना बोले पढ़ने (मौन पठन) के लिए कहें।
- जिनके अर्थ समझ में नहीं आ रहे हों उन शब्दों को श्यामपट पर लिखवा कर उनके अर्थ भी लिखवायें।
- किसी शब्द से वाक्य–निर्माण कर लिखने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों को सुनकर लिखने के लिए कहें।

- बच्चों से सोचकर लिखने / बोलने को कहें कि उनको कौन–सा जानवर पसंद है और क्यों ?
- भालू, गाय, मोर इत्यादि जानवरों के बारे में लिखने के लिए कहें।
- किसी भी एक अनुच्छेद को चुन कर उसमें विराम चिह्नों के प्रयोग पर बातचीत करें। विशेष रूप से पूर्ण विराम और अल्प विराम के प्रयोग की उपयोगिता समझायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव के साथ पढ़ने के लिए कहें।
- शब्दों के श्रुतिलेख करायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो सुनकर शब्दों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी को समझकर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी रोचक ढंग से कह सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी विषय पर चार पंक्तियाँ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी का निर्माण कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवादों को विराम चिह्नों के उपयोग करते हुए पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अन्य कहानियाँ भी पढ़ने की रुचि रखते हैं।

पाठ - 7 : फुलवारी

उद्देश्य :

- कविता को लय एवं समझ के साथ पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करना।
- किसी विषय के संबंध में अपने विचार प्रकट करने की कुशलता विकसित करना।
- अन्य कविताओं को पढ़ने की रुचि विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से भी पढ़वायें।
- कविता के अर्थ तक बच्चों को पहुँचाने में सहायता करें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक कर के श्यामपट पर लिखवायें।
- बच्चों से फूल एवं उससे संबंधित चीजों के नाम की अंत्याक्षरी खेलवायें।

समूह–कार्य

- चार समूह बनायें। सभी समूहों को फूलों के नाम व उस फूल की विशेषताओं को लिखने को कहें। हर समूह से प्रस्तुति करायें।
- बच्चों के साथ मिलकर विद्यालय में एक फुलवारी बनवायें अगर पहले से फुलवारी बनी हो, तो उसे ठीक करवायें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने कहें।
- पुस्तकालय में खरीदी गयी पुस्तकों में फूलों से संबंधित कहानियाँ / कविताएँ ढूँढ़ कर पढ़ने को कहें।
- सभी समूहों के बच्चों को बारी–बारी से अलग–अलग लय में कविता गाने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को बिना बोले (मौन पठन) पढ़ने को कहें।
- पाठ के शब्दों से वाक्य बनवायें।
- पाठ को देखकर एक अनुच्छेद लिखने को कहें।
- पाठ में आये गुलाब, कमल, भँवरा जैसे शब्दों की विशेषताओं को लिखने के लिए कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों का हल करायें एवं उनकी जाँच करें।

पुनरावृति

- एक साथ सभी बच्चों से (समवेत स्वर में) कविता–पाठ करायें। कुछ बच्चों से अलग लय में भी कविता का पाठ करायें।
- कुछ बच्चों से कविता का अर्थ सुनें।
- शब्दों को सुनकर लिखने का अभ्यास करायें एवं इसकी जाँच करें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कविता को समझ कर पढ़ सकते हैं।	ऐसे बच्चों की संख्या, जो लय में कविता–वाचन कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सवाल पूछते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपने विचारों को दूसरों के सामने रख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अन्य पुस्तकों / कविता को पढ़ने में रुचि लेते हैं।

पाठ - 8 : रक्षाबंधन

उद्देश्य

- क्रमबद्ध तरीके से किसी विषय पर अपने विचार लिखकर अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
- अपने विचार मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें–वे कौन–कौन से पर्व–त्योहार के बारे में जानते है ? उनसे पूछें उस त्योहार में क्या–क्या होता है ? प्रत्येक त्योहार के संबंध में कुछ पंक्तियाँ लिखने कहें।
- बच्चों से बात करें कि वे रक्षा–बंधन के बारे में क्या जानते हैं ?
- शिक्षक शुद्ध उच्चारण एवं हाव–भाव से कहानी को पढ़कर सुनायें और बच्चों से भी पढ़वायें।
- बच्चों से कठिन शब्दों के अर्थ पूछें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।
- बच्चों को किसी भी त्योहार के विषय में जानकारी एकत्रित करने के लिए कहें।
- बच्चों से राखी बनवायें। शिक्षक चार्ट पेपर, रंगीन कागज, स्केच पेन, कैंची, गोंद, धागे आदि उपलब्ध करायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनायें। समूह एक को होली, समूह दो दीवाली, समूह तीन को ईद एवं समूह चार को दशहरा के बारे में लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों से समूह में हुई बातचीत को पढ़कर सुनाने के लिए कहें तथा जब एक समूह अपने विचार रख ले तो, दूसरे समूह को उस विषय से जुड़े प्रश्नों को पूछने के लिए कहें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- पुस्तकालय की पुस्तकों की सहायता से विभिन्न त्योहारों पर सामग्री एकत्रित करने को प्रोत्साहित करें।
- विभिन्न पर्वों से जुड़े चित्र बच्चों से समूह में बनवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ से जुड़े तथ्यों को संक्षेप में लिखवायें।
- अर्थ समझ में नहीं आनेवाले शब्दों को लिखने के लिए कहें।
- रक्षाबन्धन से जुड़े व्यक्तिगत अनुभव सुनें।
- पाठ को देखकर चार पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- बच्चों से सोचकर लिखने/बोलने के लिए कहें कि उनको कौन–सा त्योहार पसंद है और क्यों।
- अभ्यास के प्रश्नों को हल करवायें एवं उनकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से रक्षाबन्धन के महत्त्व पर बोलने कहें।
- कठिन शब्दों को बोलें तथा कुछ बच्चों को श्यामपट पर उन शब्दों को लिखने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो कहानियों को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की सख्या, जो अपने विचार क्रम से रख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी विषय पर चार पंक्तियाँ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सवाल पूछते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपने विचार अभिव्यक्त कर पाते हैं।

पाठ - 9 : तिरंगा

उद्देश्य

- कविता को समझ एवं लय के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- कविता में प्रयोग किये गये प्रतीकों की समझ बनाना।
- नये–नये शब्दों के तुकान्त शब्द–निर्माण की क्षमता विकसित करना।
- कविता को याद करना।
- बाल–पत्रिकायें, बाल–अखबार पढ़ने की रुचि विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों को राष्ट्रीय झंडे के बारे में बतायें। उसके रंगों, चिह्नों के प्रतीक पर उनके विचार सुनें।
- स्वतंत्रता एवं गणतंत्र दिवस पर झंडा फहराते समय क्या–क्या गतिविधियाँ होती हैं ? उनपर चर्चा करें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों से झंडे का चित्र बनवायें।
- बच्चों को राष्ट्र–गान सिखायें/राष्ट्र–गान गाते समय बरती जाने वाली सावधनियों के बारे में बतायें।

समूह–कार्य

- कविता लिखवाकर कक्षा में प्रदर्शित करवायें।
- राष्ट्र–गान चार्ट–पेपर पर लिखवायें।
- सभी समूहों द्वारा अलग–अलग सस्वर पाठ करवायें।
- राष्ट्र–गान का शुद्ध वाचन करवायें।
- कविता में आये अभियान, बढ़ाता, शान, गगन, प्यारा, प्राण जैसे शब्दों के तुकान्त शब्द बनाने के लिए संख्या के आधार पर समूह–निर्माण करें।
- कविता के अर्थ पर समूहवार चर्चा करने को प्रेरित करें।
- पुस्तकालय की पुस्तकों में देशभक्ति की कवितायें ढूँढ़कर उन्हें कक्षा में गाकर प्रस्तुत करने को कहें।
- राष्ट्र–गान का मानक पाठ करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को देखकर मौन पठन करने कहें।
- पाठ में प्रयुक्त प्रतीक शब्दों को खोजने को कहें।
- अभ्यास में दिये गये प्रश्नों को हल करायें तथा उनकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से सामूहिक स्वर में लय के साथ कविता पाठ करायें।
- बच्चों को सामने बुलाकर कविता की पंक्तियाँ लयबद्ध गवायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो राष्ट्र–गान को लय से सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो राष्ट्र–गान के प्रतीकों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो तुकबन्दी कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जिन्हें देशभक्ति की कोई कविता याद है।	बच्चों की संख्या, जो बाल–पत्रिका एवं अखबार पढ़नें में रुची लेते हों।

पाठ - 10 : कौवा और साँप

उद्देश्य

- कहानियों को समझ के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- संवादों को समझने तथा उन्हें कहने का तरीका विकसित करना।
- पठन में गति लाना।
- कहानी के क्रम के महत्त्व को समझाना।
- अन्य लोक कथाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से कौवे और साँप के बारे में चर्चा करें, जैसे– वे कहाँ रहते हैं? किस रंग के होते हैं? क्या खाते हैं? इत्यादि।
- बच्चों की बातों को श्यामपट पर अंकित करें।
- बात करें–क्या कौवे और साँप में दोस्ती हो सकती है ? बच्चों के विचार धैर्यपूर्वक सुनें।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र के बारे में बातचीत करें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनायें और बच्चों से भी पढ़वायें।
- कहानी को सुनकर बच्चों के मन में आ रहे विचारों को सुनें।

समूह–कार्य

- बच्चों की संख्या के आधार पर समूह बनायें। किसी समूह को कौवा, किसी को साँप, किसी को रानी, किसी को सिपाही, किसी को पेड़ के संबंध में कुछ भी बातचीत करने के लिए कहें।
- सभी समूहों को विचार करने को कहें कि कौवा साँप से और कैसे बदला ले सकता था ? बच्चों के विचारों को बारी–बारी से सुनें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में करने के लिए कहें।
- पुस्तकालय की पुस्तकों/अखबार में जानवरों से संबंधित कहानियाँ ढूँढ़कर छोटे समूह में पढ़ने के लिए दें।
- कौवा, कौवी, रानी, सिपाही आदि के संवाद को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहें।
- कहानी में पात्रों को बदल कर समूह में कहानी सुनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को बिना बोले (मौन) पढ़ने के लिए कहें।
- रोचक प्रसंग चयन करने को कहें तथा वाचन करायें।
- कठिन शब्दों का श्रुतिलेख करायें एवं जाँचें। प्रत्येक शब्द से कुछ वाक्य बनवायें।
- कहानी को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करें।

पुनरावृत्ति

- कहानी में आयी घटनाओं को क्रम से लिखने को कहें। इस पर विचार कर सकते हैं कि यदि एक क्रम भी समाप्त हो जाए तो कहानी का क्या होगा।
- बच्चों से यह कहानी संक्षेप में सुनें।
- बच्चों को एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति को बोलते हुए कौआ और साँप की कहानी को पूरा करने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो कहानियों को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो रुचि से संवाद बोलते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पठन–क्षमता योग्यता रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवादों को क्रम से बोल पाते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अन्य लोक कथाओं की जानकारी रखते हैं।

पाठ - 11 : उलटा-पुलटा

उद्देश्य

- कविता को आनंद से लय के साथ पढ़ना।
- अन्य जीवों की क्रियाओं एवं आदतों का निरीक्षण करने के लिए प्रेरित करना एवं उसको लिखने की आदत का विकास करना।
- तुकान्त शब्दों के प्रति रुचि पैदा करना।
- विभिन्न ध्वनियों के बीच अंतर करने की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से कीड़े–मकोड़ों से जुड़े अनुभव सुनें। बातचीत करें कि वे कैसे चलते, उछलते, कूदते और क्या–क्या खाते–पीते हैं।
- बातचीत को श्यामपट पर लिखें और बच्चों को पढ़ने के लिए कहें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- कविता का सरल अर्थ बच्चों को बतायें।
- बच्चों के द्वारा चयनित कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखकर उन पर बातचीत करें।
- समान ध्वनि वाले शब्दों की पहचान करायें तथा कविता में आए ऐसे शब्दों को चिह्नित करायें।

समूह–कार्य

- बच्चों की संख्या के आधार पर कई समूह बनायें। कविता में बताये गये जंतुओं के अलावे अन्य जंतुओं के बारे में कविता बनाने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह से प्रस्तुति करायें।
- मिलते–जुलते उच्चारण वाले शब्दों को चिह्नित करने के लिए कहें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में करायें।
- प्रत्येक समूह से अलग–अलग कविता–पाठ करायें।
- कविता को कहानी के रूप में लिखने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को देखकर बिना बोले (मौन) पढ़ने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों को चुनकर लिखवायें इसकी जाँच करें एवं इनके शब्दार्थ बतायें।
- जीव–जगत से जुड़े शब्दों को लिखवायें एवं जाँचे।
- प्रत्येक शब्द से वाक्य बनवायें।
- पाठ को देखकर चार पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- समान ध्वनि वाले शब्दों की सूची बनवायें।
- कविता की नाट्य प्रस्तुति करवायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- कविता के साथ चित्रित चित्रों पर बच्चों के विचार जानें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो जीवों की प्रकृति के विषय में बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों की ध्वनि के आधार पर शब्द–चयन कर पाते हैं।

पाठ - 12 : गाँधी जी की कहानी-चित्रों की जुबानी

उद्देश्य

- चित्रों के माध्यम से बातचीत करने की कला को विकसित करना।
- बच्चों में, बातचीत करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की क्षमता विकसित करना।
- चित्र देखकर घटनाओं के बारे में बात कर सकने की क्षमता पैदा करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से गाँधीजी के सभी चित्र देखने को कहें। उन्हें कौन–सा चित्र सबसे अधिक पसंद आ रहा है और क्यों ? कारण भी बताने को कहें।
- बच्चों को चित्रों के नीचे लिखे शीर्षकों को पढ़ने को कहें, तथा उन्हें विस्तारित करने को कहें।
- शिक्षक एक–एक चित्र पर बच्चों से बातचीत करें। उन्हें अंदाज लगाने का मौका दें और उसके बाद चित्र के बारे में बतायें। हर चित्र पर बतायी गयी बातचीत को कागज में लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करें।
- शिक्षक गाँधीजी की जीवनी सुनायें।
- जहाँ कहीं भी महापुरुषों के चित्र लगे हुए हों उनके बारे में बच्चों को जानकारी लेने को प्रेरित करें।

समूह–कार्य

- संख्या के आधार पर समूह बनाकर बच्चों को लिखने का मौका दें कि गाँधी जी ने अपने जीवन में क्या–क्या किया ? बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों से समूह की बातचीत को बताने के लिए प्रेरित करें।
- अलग–अलग समूह में बच्चे पता करें–गाँधी जी के पहनावे में बदलाव क्यों आया ? बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों से समूह की बातचीत को बताने के लिए प्रेरित करें।

व्यक्तिगत कार्य

- गाँधी जी के विषय में बच्चों के पूर्व अनुभव को लिखने के लिए कहें।
- बच्चों से सोचकर लिखने / बोलने को कहें कि उनको गाँधी जी का कौन–सा रूप पसंद है और क्यों ?
- सभी बच्चों को गाँधीजी के बारे में एक पन्ना साफ–साफ लिखने के लिए कहें। हर एक लिखे हुए पन्ने को प्रदर्शनी के रूप में लगायें। वर्ग के सभी बच्चे एक दूसरे की हस्तलिपि को देखें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को, चित्र देखकर उसके बारे में बताने का मौका दें।
- बच्चों से गाँधी जी से जुड़ी बाते पूछें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा		
बच्चों की संख्या, जो चित्रों को देखकर उसपर बात कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्रों को देखकर गाँधी जी की कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो साफ–साफ लिखते हैं।

पाठ - 13 : राजगीर

उद्देश्य

- अपने अनुभवों को सुनाने की क्षमता विकसित करना।
- पत्र संवाद को समझने की क्षमता पैदा करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें कि वे कहाँ–कहाँ घूमने गये हैं ? बच्चे घूमने के लिए बाजार से लेकर दूसरे शहर अथवा गाँव भी जा सकते हैं। उनसे पूछें–उन्होंने वहाँ क्या–क्या देखा।
- बच्चों को अपने अनुभव को सुनाने का मौका दें।
- बच्चों से चिट्ठी के बारे में बात करें ? पूछें चिट्ठी क्यों लिखी जाती है ? चिट्ठी का प्रारूप बच्चों को दिखायें।
- गाँव के पोस्टमास्टर साहब या डाकिया को कक्षा में बुलाकर पत्रों के पहुँचने की प्रक्रिया पर वर्गकक्ष में चर्चा करवायें।
- शिक्षक पत्र को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- पाठ के कठिन शब्दों को एक–एक कर के श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उस शब्द को उस पाठ में खोजने को कहें। तब बच्चों को अर्थ तक पहुँचाने में बच्चों की मदद करें।
- बच्चों को पोस्टकार्ड, लिफाफा, अंतर्देशीय पत्र लाकर दिखायें एवं उन पर पत्र लिखवायें।
- बच्चों को निम्नांकित के बारे में बतायें – राजगीर, शिलाघटित महाप्रासाद, बिम्बिसार, अजातशत्रु का स्तूप, वेणुवन, सोन भंडार गुफा।

समूह–कार्य

- बच्चों की संख्या के आधार पर समूह बना लें। सभी समूहों को एक–एक अलग विषय देकर पत्र में क्या–क्या लिखा जाना चाहिए, उसे मौखिक रूप से सुना दें।
- अभ्यास के सवालों को समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- पुस्तकालय में खरीदी गयी पुस्तकों में से ऐतिहासिक स्थलों से संबंधित जानकारी वाली पुस्तके लेकर पढ़ने कहें तथा प्राप्त जानकारी को संक्षेप बताने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ में आये महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक शब्दों को एकत्रित कर उनका संदर्भ जानने का प्रयास करें।
- बच्चों से चिट्ठी लिखवायें।

पुनरावृत्ति

- राजगीर के प्राकृतिक सौंदर्य के बारे में पूछे।
- किसी (माता, पिता, भाई, बहन, मित्र .....) के पास पत्र लिखकर दिखाने कहें एवं उसकी जाँच करें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जिन्हें अपने अनुभवों को विस्तार से सुनाने की इच्छा होती है।	बच्चों की संख्या, जो पत्र को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो वर्णन करने की क्षमता रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी यात्रा के अनुभव दूसरों को बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पत्र लिख सकते हैं।

पाठ - 14 : दीप जले

उद्देश्य

- कविता को लयबद्ध गाने की क्षमता विकसित करना।
- किसी विषय पर कुछ पंक्तियाँ लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अन्य कविताओं को पढ़ने की रुचि विकसित करना।
- विभिन्न ध्वनियों के बीच अंतर करने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से, दीपावली से जुड़े अनुभव पूछें। पता करें कि वे दीपावली में क्या–क्या करते हैं ?
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और उसे बच्चों से पढ़वायें।
- कविता में आये समान ध्वनि वाले शब्दों के अर्थ पर बातचीत करें।
- बच्चों को तुकान्त शब्दों को बतायें।

समूह–कार्य

- बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दें। हर समूह को कविता की कुछ पंक्तियाँ देकर बारी–बारी से समूह वाचन करायें।
- संख्या के आधार पर समूह बनायें। बच्चों को आपस में बातचीत कर दीपावली के बारे में लिखने या बोलने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों से समूह द्वारा लिखी गयी बातों को पढ़ने के लिए कहें।
- पाँच नये समूह बनायें। पाँचों समूहों से कविता की पाँच–पाँच पंक्तियों को नयी लय में तैयार करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों से कविता को नयी लय में सुनाने को कहें।
- समूह में ही उच्चारण के आधार पर मिलते–जुलते शब्दों को छाँटने के लिए कहें।
- तुकबंदी द्वारा कविता–निर्माण करने के लिए प्रेरित करें तथा उन कविताओं को चार्ट पर प्रदर्शित करें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर लिखने के लिए कहें।
- पुस्तकालय में खरीदी गयी पुस्तकों से त्योहार से संबंधित कहानियाँ ढूँढ़ कर पढ़ने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को देखकर मन–ही–मन पढ़ने के लिए कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखवायें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद उन्हें लिखवायें एवं जाँचें। हर शब्द के लिए समान अर्थ वाले शब्द लिखने को कहें।
- शब्दों के श्रुतिलेख करवायें एवं उनकी जाँच करें।
- अब, पूरी कविता को देखकर लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से दीपावली विषय पर उनके विचार लिखने को कहें।
- बच्चों से सामूहिक स्वर में कविता सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कविता को लयबद्ध तरीके से पढ़ते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कुछ पंक्तियाँ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अन्य कविताओं को पढ़ने में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो उच्चारण में मिलते –जुलते शब्दों को पहचान सकते हैं।

पाठ - 15 : साहसी इंदिरा

उद्देश्य

- अपने विचारों को दूसरों के समक्ष रखने की क्षमता विकसित करना।
- पाठ में आये नये शब्दों को खोजकर; उनका अर्थ खोजने की क्षमता का विकास करना, जैसे– आन्दोलन, योजना, खाका, आदि।
- पाठ पर छोटे एवं सरल सवाल बनाने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- साहसिक कार्य कौन–कौन होते हैं, बच्चों को बताने के लिए प्रेरित करें तथा मुख्य बातों को श्यामपट पर लिखें।
- बच्चों को स्व० इंदिरा गाँधी के बारे में बतायें।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र के बारे में बातचीत करें।
- पाठ के मुख्य बिंदुओं के बारे में बच्चों से बातचीत करें।

समूह–कार्य

- संख्या के आधार पर छोटे–छोटे समूह बनायें। प्रत्येक समूह के बच्चे कहानी के संवादों को आपस में दुहरायें, ऐसा प्रयास करें।
- चार–पाँच समूह बनाकर बच्चों को सोचने का मौका दें कि उन्हें किस कार्य को करने से अपने पर गर्व हुआ ? बारी–बारी से प्रत्येक समूह के बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित करें।
- चार–पाँच नये समूह बनाकर बच्चों से पाठ का नाटकीय–वाचन करायें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने के लिए कहें।
- पुस्तकालय में खरीदी गयी पुस्तकों में देशभक्ति/व्यक्तित्त्व से सम्बंधित कहानियाँ ढूँढ़ कर पढ़ने के लिए कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों को मौन पाठ का निर्देश दें। लगभग 10 मिनट बाद अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखने के लिए कहें।
- अब, बच्चों से अपनी 'माँ' के बारे में लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से एक–एक करके इस पाठ की घटनाओं को बताने के लिए कहें।
- सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव के साथ बच्चों से पढ़वायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो तेजी से तथा ठीक – ठीक पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवादों को समझ कर पढ़ पाते हैं।

पाठ - 16 : गंगा नदी

उद्देश्य

- कविताओं को लयात्मक रूप में पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- समझकर पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न ध्वनियों के बीच के अंतर को समझने की क्षमता पैदा करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से नदी के बारे में उनके अनुभव सुनें। उनसे पता करें कि वे किस–किस काम के लिए नदी जाते हैं ?
- बच्चों से उनके गाँव / शहर के आसपास की नदियों के बारे में विस्तार से सुनें।
- बच्चों से पूछें कि आप में से कितने लोगों ने गंगा नदी को कहाँ–कहाँ देखा है ?
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- पाठ के कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। बच्चों से उन शब्दों के अर्थ पूछें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।
- गाँव की नदी, तालाब, पोखर पर चर्चा करें कि वे कैसे बने और कितने साफ़ या गंदे हैं।

समूह–कार्य

- बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनायें।
- समूह में प्रदूषण के बारे में आपस में बातचीत करने के लिए कहें। प्रदूषण का इसका अर्थ अगर बच्चे न जानते हों, तो उन्हें बता दें। फिर प्रदूषण किस–किस तरह से हो सकता है तथा इसे कैसे रोका जा सकता है इस विषय पर बात करने के लिए कहें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत करके लिखने के लिए कहें।
- समूह में बच्चों से चर्चा करें कि विद्यालय को कैसे साफ़ रखना चाहिए समय–समय पर सफ़ाई अभियान चलवायें।
- समूह में ही बच्चों से बिहार में या भारत में बहने वाली नदियों के नामों की सूची बनवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को देखकर मन–ही–मन में पढ़ने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों को लिखने के लिए कहें।
- छठ पर्व के दौरान नदी तट पर किये जाने वाले आयोजन के बारे में पूछें।
- पाठ को देखकर कुछ पंक्तियाँ बच्चों से लिखवायें।
- बच्चों को गंगा–नदी के बारे में लिखने के लिए कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों को हल करायें एक उनकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से पूछें उन्हें इस कविता से नदियों के विषय में क्या समझ बनी।
- बच्चों से एक साथ कविता पाठ करायें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव के साथ पढ़ने के लिए कहें।
- कविता नयी लय में सुनाने कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय के साथ पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो इसी तरह की अन्य कविता के विषय में जानकारी रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो उच्चारण में मिलते–जुलते शब्दों को पहचान जाते हैं।

पाठ - 17 : बैलगाड़ी का दाम

उद्देश्य

- कहानियों को समझ कर तेजी से पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- हाव–भाव के साथ कहानी कहने की क्षमता विकसित करना।
- किसी विषय पर लिखने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- एक बैलगाड़ी का मूल्य कितना हो सकता है ? बच्चों से अंदाज लगाने को कहें।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्रों के बारे में बातचीत करें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनायें तत्पश्चात बच्चों से पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। बच्चों से उन शब्दों के अर्थ पूछें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।

समूह–कार्य

- बच्चों की संख्या के आधार पर समूह बनायें। समूह में कहानी के संवादों को बोलने का अभ्यास करायें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के बच्चे से कोई संवाद सुनाने के लिए कहें।
- चार–पाँच समूह बनाकर हर समूह में बच्चों को एक दूसरे को कहानी सुनाने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों को शब्द–अंत्याक्षरी समूह में खेलने दें।
- कहानी का नाट्य रूपांतरण करने को प्रोत्साहित करें और इसमें सहयोग दें।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ का मौन वचन करायें।
- पाठ के कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखने के लिए बच्चों से कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- फिर हर शब्द पर दो वाक्य लिखने को कहें।
- अब, पाठ को देखकर कुछ पंक्तियाँ लिखने के लिए बच्चों से कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों को हल करायें तथा उनकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से एक–एक करके इस कहानी की घटनाओं को बताने के लिए कहें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव के साथ पढ़ने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कहानियों को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो हाव–भाव के साथ कहानी पढ़ते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवादों को समझ कर पढ़ पाते हैं।

पाठ - 18 : हम सब

उद्देश्य

- कविता के लयपूर्ण वाचन की क्षमता विकसित करना।
- तुकान्त पंक्तियाँ लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पाठ्यपुस्तकों से बाहर की कविताओं, पुस्तकों को पढ़ने की रुचि विकसित करना।
- विभिन्न ध्वनियों के बीच अंतर कर सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बात करें – हमें अपने परिवार में कैसे रहना चाहिए ?
- कविता का सरल अर्थ बच्चों को बतायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को पाठ में खोजने को कहें। बच्चों से उन शब्दों के अर्थ पूछें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।
- कविता को घटना में बदलने का प्रयास करें। उन्हें अभ्यास द्वारा सिखायें कि कैसे कविता संवाद में बदल सकती है।

समूह–कार्य

- कविताओं में जो शब्द दिये गये हैं, कोई पाँच शब्द हर एक समूह को दे दें। समूह में ही बच्चों को हर एक शब्द से मिलते–जुलते तीन–तीन शब्द बनाने को कहें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में ही बातचीत करके लिखने के लिए कहें।
- कविता को घटना के रूप में बच्चों से लिखवायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ को देखकर मन–ही–मन में पढ़ने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों को लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों का अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें। हर शब्द से दो वाक्यों निर्माण करने कहें।
- पाठ को देखकर कुछ पंक्तियाँ बच्चों से लिखवायें।
- बच्चों को अपने देश के बारे में लिखने को कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों के हल करायें एवं उनकी जाँच करें।
- शब्दकोश के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करें।

पुनरावृत्ति

- सभी बच्चे एक साथ कविता पाठ करें।
- कविता नयी लय से सुनें।
- कुछ बच्चों से कविता का अर्थ सुनें।
- बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव से पढ़ने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कविता को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता का भाव समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो गतिविधि में सक्रिय भाग लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो उच्चारण में मिलते–जुलते शब्दों को पहचान जाते हैं।

पाठ - 19 : कुत्ते की कहानी

उद्देश्य

- कहानियों को समझ कर पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी कहने की क्षमता विकसित करना।
- किसी विषय पर लिखने की क्षमता विकसित करना।
- जीव–जन्तुओं के प्रति संवेदनशील बनाना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों को कुत्ते या अन्य पालतू जीव से जुड़े उनके अनुभवों को सुनाने के लिए प्रेरित करें।
- बच्चों से सुनें–उन्होंने आज दिन भर क्या किया ?
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। बच्चों से उन शब्दों के अर्थ पूछें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।
- नये शब्दों की सूची बनवायें व उनके अर्थों को बतायें।

समूह–कार्य

- बच्चों को संख्या के आधार पर समूह में बैठायें और हर समूह को अलग–अलग कहानी के अंश पुर्जे में लिखकर दें। उन्हें कहानी को पूरा करने के लिए कहें। हर एक समूह से कहानी सुनें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर लिखने के लिए कहें।
- कुत्ते के पालने के क्या लाभ हैं ? समूहवार जानने का प्रयत्न करें।
- जानवरों पर जानकारी एकत्रित कर सुनाने कहें।
- जानवर से संबंधित कोई कहानी पुस्तकालय से खोजकर समूह से पढ़ने तथा कक्षा में सुनाने कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को देखकर मन–ही–मन लगभग 10 मिनट मौन पाठ करने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों को लिखने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें। हर शब्द पर दो वाक्य लिखने को कहें।
- पाठ को देखकर कुछ पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- बच्चों को कुछ शब्द दें और उन पर लिखने को कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों को हल करवायें एवं उनकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से एक–एक करके इस कहानी की घटनाओं के बारे में बताने कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो कहानियों को समझ कर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो रोचक ढंग से कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बातचीत में रुचि लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो जानवरों के विषय में कुछ नये विचार रखते हैं।

पाठ - 20 : खेल-खेल में

उद्देश्य

- विभिन्न खेलों के प्रति रुचि जागृत करना।
- संवादों को पढ़ कर विषय–वस्तु की समझ बनाना।
- किसी विषय पर कुछ पंक्तियाँ लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अपनी बात कहने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से खेल से जुड़े अनुभवों को सुनें।
- बच्चों से पूछें कि उन्होंने बीते सप्ताह में कौन–कौन से खेल खेले। उनमें कौन–कौन सहपाठी उनके साथ खेला। उस खेल में खेलने का क्या तरीका।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ पाठ को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- संवादों को रचने के तरीके पर बातचीत करें। बच्चों से उस शब्द का अर्थ पूछें। अर्थ तक पहुँचने में बच्चों की मदद करें।

समूह–कार्य

- बच्चों की संख्या के आधार पर समूह बनायें। सभी समूहों से एक–एक खेल पर बातचीत करने को कहें। बच्चे हर एक खेल के नियम के बारे में बतायें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों के द्वारा खेल के नियम सुनें।
- चार–पाँच समूह बनाकर बच्चों से पाठ के संवादों को बोलने का अभ्यास करायें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के इस पाठ को अन्य किसी खेल में बदलिए।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत करके लिखने को कहें।
- समूह के प्रत्येक बच्चे किसी एक खेल के नियम बतायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ के देखकर मन–ही–मन पढ़ने के लिए कहें तथा इसे अपने खेल के अनुभव से जोड़े।
- कठिन शब्दों का श्रुतिलेख करायें।
- बच्चों से खेल के दौरान होने वाली बातचीत को लिखने को कहें।
- खेल में हारने/जीतने पर कैसा महसूस होता है बताने के लिए प्रेरित करें।
- बच्चों को अपनी पसंद के खेल के बारे में लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों द्वारा लिखी गयी खेल कविताओं को सुनें।
- कुछ बच्चों से पाठ के संवाद सुनें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव से पढ़ने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो पाठ के विषय को समझ पाए।	बच्चों की संख्या, जो खेल पर अपने विचार लिख पाए।	बच्चों की संख्या, जो विराम चिह्नों का प्रयोग ठीक–ठीक कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या,जो खेल के बारे में अपने अनुभव विस्तार से बता सकते हैं।

वर्ग-III

तीसरा सत्र	दूसरा सत्र	पहला सत्र	सीखने के बिन्दु
			विभिन्न ध्वनियों को सुनकर अंतर करता है।
			कविता/कहानी को हाव-भाव एवं उतार-चढ़ाव के साथ सुनाता है।
			कहानी के पात्रों पर अपनी राय देता है।
			समझते हुए, स्पस्ट उच्चारण के साथ हिन्दी पढ़ता है।
			नये शब्दों के अर्थ जानता है।
			शब्दों को समझकर उपयोग करता है।
			चार-पाँच वाक्यों को पढ़कर उनसे संबंधित प्रश्नों के उत्तर देता है।
			शब्दों को सीधी रेखा में लिखता है।
			सुनकर शब्द या वाक्य लिख लेता है।
			अपने अनुभवों को क्रमवार बताता है।
			दिये गये शब्दों से वाक्य बनाता है।
			आस-पास के परिचित पशुओं एवं वस्तुओं के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखता है।

हिन्दी